एल्सी का युद्ध

नात्ज़ी जर्मनी में साहस की एक कहानी

हैनरी कार्टिएर-ब्रैसॉन के परिचय सहित

लेखनः फ्रैंक डैबा स्मिथ

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

कैथी, मिरियम, लूइस, व सारा के लिए

फ्रैंक डैबा का जन्म कैलिफोर्निया में हुआ। उन्होंने बर्कले स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से भाषाई नृशास्त्र का अध्ययन किया, और तब शिक्षक बने। 1994 में लियो बैक कॉलेज, लंदन में रबाई के पद पर उनका अभिषेक हुआ। वे स्वतंत्र फोटोग्राफर के रूप में काम करते हैं। *द इकनोमिस्ट* ने उनकी 150 से अधिक तस्वीरें प्रकाशित की हैं। फ्रांसिस लिंकन से छपी उनकी पहली पुस्तक थी, *माय सीक्रेट कैमरा*।

एल्सी का युद्ध

नात्ज़ी जर्मनी में साहस की एक कहानी

हैनरी कार्टिएर-ब्रैसॉन के परिचय सहित

लेखन: फ्रैंक डैबा स्मिथ
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मैं एल्सी लाइत्ज़ को अच्छी तरह जानता था। जब भी मैं वैत्ज़लार गया उन्होंने हाउस फ्रीडवार्ट में मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया।

अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी मसलों को लेकर उनके गहरे सरोकार और युद्ध के दौरान व्यक्तिगत जोखिम के बावजूद विपदा का सामना कर रहे लोगों को बचाने के उनके प्रयासों ने मुझे बेहद प्रभावित किया।

मैं गहरी श्रद्धा के साथ उनका स्मरण करता हूँ।

- हैनरी कार्टिएर-ब्रैसॉन

J'ai bien connu Elsie Leitz qui m'a toujours reçu à Haus Friedwart très chaleureusement pendant mes séjours à Wetzlar.

J'étais très impressionné par ses profondes préoccupations pour les causes humanitaires internationales et les grands risques qu'elle a couru en sauvant de nombreuses personnes menacées pendant la guerre.

Je salue profondément sa mémoire.

Henri Cartier-Bresson
(Leicaiste amateur)

एल्सी कूह्न-लाइत्ज़

एल्सी कून-लाइत्ज़ व उनका परिवार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी में रहता था।

यह युद्ध अब तक लड़े गए युद्धों में सबसे विनाशकारी था। नात्ज़ियों ने जर्मनी पर नियंत्रण हासिल कर लिया था और वे उन सब लोगों का खात्मा कर कर देना चाहते थे जो उनसे असहमत थे, या जिन्हें वे नापसंद करते थे। नात्ज़ियों ने अनेक बेकसूरों को नज़रबन्दी शिविरों में कैद कर दिया, जिनके हालात बयान ही नहीं किए जा सकते। और करोड़ों लोगों की नृशंस हत्या कर दी।

नात्ज़ी जो कुछ कर रहे थे उससे एल्सी और उसके परिवार को घृणा थी। एल्सी ने युद्ध की अवधि जोखिम में पड़े लोगों की आज़ादी और उनके लिए न्याय का संघर्ष करते बिताई।

1933 में जब नात्ज़ी पहले-पहल सत्ता में आए, तब से ही उन्होंने कई जर्मन नागरिकों का जीना हराम कर दिया। खास तौर से यहूदियों को सताया गया, उन्हें मारा-पीटा गया। जो कोई नात्ज़ियों के क्रूर विचारों से असहमति जताता उसे बन्दी बना जेल में ठूंस दिया जाता, और अक्सर उसकी हत्या कर दी जाती।

एल्सी के पिता फ्रैंकफर्ट के पास वैत्ज़लार में लाइत्ज़ कैमरा कारखाने के मालिक थे। जैसे ही उन्हें समझ आया कि यहूदियों को नात्ज़ियों से खतरा है, उन्होंने युवा यहूदियों को अपने कारखाने में रोज़गार देना शुरू कर दिया। वहाँ इन नौजवानों की नात्ज़ी जर्मनी से निकल भागने में और विदेशों में अच्छा रोज़गार पाने में मदद की जाती थी ताकि वे सुरक्षित और आज़ाद रह सकें।

वैत्ज़लार के मुख्य चैक में नात्ज़ी सभा

1939 में युद्ध आरंभ हो जाने के बाद लाइत्ज़ कम्पनी अपने प्रसिद्ध उत्पाद दुनिया के दूसरे देशों में बेच नहीं सकती थी। नात्ज़ियों की मांग थी कि कम्पनी युद्ध में सैन्य उपयोग के वास्ते कैमरा, दूरबीन और दूसरे उपकरण बना कर जर्मनी की मदद करे।

इधर कारखाने के कई कामगारों को सैनिकों के रूप में लाम पर भेज दिया गया था। श्रमिकों की कमी के चलते नात्ज़ियों ने यूक्रेन की कई महिलाओं को बंधुआ मज़दूरों की तरह काम करने कारखाने भेजा। यहाँ उन्हें उत्पादन से जुड़े कुछ काम करने का प्रशिक्षण दिया गया।

एल्सी इन स्त्रियों की मदद करना चाहती थी, जिन्हें अपने घर-बार और परिवार से इतने दूर भेज दिया गया था।

लाइत्ज़ कारखाना

एल्सी कारखाने में खटने वाली इन कामगारों को अधिक भोजन, कम्बल और कपड़े, यहाँ तक कि रेडिया भी देती थी।

इन युवतियों में एक थी नीना बैज़बैन्को, जो कारखाने में घंटों लैन्स साफ करने का काम करती थी। यह काम काफी कठिन था, पर एल्सी के कारण उसका जीवन कुछ आसान बन सका था।

अगर नात्ज़ी खुफिया पुलिस गस्टापो को यह पता चल जाता कि एल्सी इन औरतों की मदद कर रही है, तो वे बेहद खफा होते। पर एल्सी के जीवन की सबसे बड़ी चुनौती तो अभी आनी बाकी थी। ऐसी चुनौती जो उसके जीवन को खतरे में डाल दे।

मई 1943 में एल्सी से कहा गया कि वह एक यहूदी महिला हैडविग पाम की मदद स्विट्ज़रलैण्ड भागने में करे। हैडविग का फरार होना इसलिए ज़रूरी था क्योंकि गस्टापो उसे कैद कर नज़रबन्दी शिविर में ले जाने वाली थी। ज़ाहिर था कि वहाँ शर्तिया उसकी मौत हो जाती।

एल्सी ने गुप्त योजना बनाई और यह तय हुआ कि हैडविग, एल्सी की म्युनिख में रहने वाली मौसी के घर शरण लेगी। बाद में वहाँ से स्विस सरहद पार कर आज़ादी हासिल कर सकेगी।

नीना बैज़बैन्को (दाहिने) और उसकी दोस्त (जैकेट पर कढ़ा हुआ शब्द ‘ओस्ट’ दर्शाता है कि वह पूर्वी यूरोप की बंधुआ मज़दूर थी।)

हैडविग बीच रात निकली। उसे पकड़े जाने का डर सता रहा था। वह जानती थी कि किसी भी वक्त उससे पहचान पत्र दिखाने की मांग की जा सकती है। अगर यह ज़ाहिर हो जाता कि वह यहूदी है, तो खेल खत्म ही था।

आखिरकार वह एल्सी की मौसी के घर सुरक्षित पहुँच गयी। पर सफर का अगला चरण और भी खतरनाक था।

कुछ सप्ताह म्युनिख में छिपे रहने के बाद हैडविग स्वित्ज़रलैण्ड के लिए निकली। हालांकि एल्सी ने उसे एक नक्शा दिया था, थकान और भय के कारण वह जल्दी ही राह से भटक गई।

उसने दूध के ट्रक को सड़क पर गुज़रते देखा और उसके चालक से रास्ता पूछा। मन ही मन वह यह दुआ करती रही कि चालक भरोसेमंद हो, और शायद वह सुरक्षित सरहद पार कर सके।

पर चालक ने कयास लगा लिया कि हैडविग यहूदी है। उसने बिना हिचकिचाए सरहद पुलिस को उसकी खबर कर दी।

एल्सी की योजना विफल हो गई।

हैडविग पाम का पहचान पत्र (इसमें दिखने वाला बड़ा-सा अक्षर 'जे' स्पष्ट करता है कि वह 'ज्यू' यानी यहूदी है।)

गस्टापो को वारदात की तहकीकीत करते समय जल्दी ही पता चल गया कि एल्सी ने हैडविग की मदद की थी। उन्होंने एल्सी को वेत्ज़लार के अपने दफ्तर में पेश होने का हुक्म दिया।

जान को खतरे में महसूस करने की अब एल्सी की बारी थी। 'मुझे यह डर था कि मेरे साथ कुछ बहुत ही बुरा होने वाला है,' एल्सी ने कहा।

गस्टापो ने घंटों तक सख्ती से उससे पूछताछ की। तब वे शब्द बोले गए जिसका एल्सी को डर था: 'तुम्हें गिरफ्तार किया जाता है।'

एल्सी को घर ले जाया गया ताकि वह परिवार से विदा ले ले। जब एल्सी घर पहुँची उसके बच्चे सोने जाने की तैयारी कर रहे थे। जब उसने उन्हें बताया कि उसे जाना होगा, 'उनके चिंतित चेहरों को मैं कभी भुला नहीं सकती,' एल्सी ने बाद में कहा। 'मैं कुछ ही दिनों में लौट आऊंगी,' एल्सी ने आवाज़ को चिन्ता मुक्त बनाते हुए कहा; पर वे बखूबी जानती थीं कि शायद वे अपने बच्चों को कभी न देख सकें।

एल्सी अपने बच्चों कोर्नेलिया और नूट के साथ

एल्सी को फ्रैंकफर्ट में स्थित गस्टापो कारावास में कैद रखा गया। उसको दी गई छोटी-सी कोठरी बेहद गन्दी थी। अंधेरे में पढ़ने की कोशिश के कारण एल्सी की आँखें जलतीं और उनसे आँसू टपका करते थे। उनकी चमड़ी खटमलों के कारण खुजलाती थी। सब कुछ बदबूदार था। अकेलेपन का उनका अहसास गहरा था और भविष्य को लेकर वे भयभीत भी थीं। इस सब के बावजूद वे कोशिश करतीं कि वे अपने मन में आज़ादी महसूस करती रहें।

फ्रैंकफर्ट के क्लापरफैल्ड स्ट्रासे में एल्सी की जेल

समय घिसटता रहा, एल्सी कमज़ोर से कमज़ोरतर होती गई। पर उसे यह छूट दी गई थी कि वह अपने पिता द्वारा भेजे गए खाने की सामग्रियों का पैकेट कभी-कभार पा सके।

'मैं इन चीज़ों को अपने साथी कैदियों के साथ बाँटती थी, आखिर वे भी तो ठीक मेरी ही तरह भूखी होती थीं,' उन्होंने बताया।

एल्सी कोशिश करती कि वे खुशमिजाज़ और मज़बूत बनी रहें ताकि जेल में कैद दूसरी औरतों को हौसला दे सकें। खुद अपना हौसला बनाए रखने के लिए वे अपनी कोठरी में एक स्टूल पर खड़ी हो छोटी-सी खिड़की से झांकती - रोशनी को देखतीं। अपनी ताकत बनाए रखने के लिए वे हर दिन वर्जिश करतीं। अपने वर्जिश के अंत में वे ताला बन्द भारी-भरकम दरवाज़े का टेका लगा अपने हाथों के बल खड़ी होतीं।

एल्सी जेल में साथी कैदियों से हौसला भी पाती थीं। थुसनैल्डा से, जो काफी बूढ़ी और बीमार स्त्री थी, एल्सी की दोस्ती हुई।

'कभी हताश न होना!' थुसनैल्डा कहती। 'जो दरवाज़ा तुम्हें जेल में दाखिल करने को खुला था, वह फिर से तुम्हें आज़ाद करने के लिए भी खुलेगा।'

क्लापरफैल्ड स्ट्रासे जेल के अन्दर

सच ही कहा था थुसनैल्डा ने। एल्सी अन्य कैदियों से ज़्यादा खुशनसीब साबित हुई - उसकी जान बच गई। अपने एक मित्र की मदद से एल्सी के पिता ने गस्टापो को फिरौती की रकम अदा की ताकि एल्सी को रिहा कर दिया जाए।

'फिर से अपनी आज़ादी हासिल कर मुझे जो खुशी मिली उसे बयान करने के लफ्ज मुझे खोजे नहीं मिल रहे,' एल्सी ने रिहा होने पर घोषणा की।

वह अपने परिवार को फिर से देख पाने का मौका पा इस कदर शुक्रगुज़ार थी कि उसने घर की सीढ़ियों को घुटनों के बल पार किया। एल्सी के पिता उसकी गैर-मौजूदगी में फिक्र से बीमार पड़ चुके थे। उनकी देखभाल करने की अब एल्सी की बारी थी।

एल्सी अपने पिता डॉ. अर्नेस्ट लाइत्ज़ के साथ

युद्ध जारी रहा, पर एल्सी का स्वास्थ्य समय के साथ बेहतर होता गया। गस्टापो ने उस पर कड़ी नज़र रखना कभी बन्द नहीं किया। उसे अक्सर पूछताछ के लिए बुलाया जाता रहा।

आखिरकार मार्च 1945 में अमरीकी सैनिक वैत्ज़लार को मुक्त करवाने उसकी दिशा में बढ़ रहे थे। यह खबर मिलते ही एल्सी अपनी साइकिल पर उछल कर सवार हुई और इस उम्मीद से निकल गई कि वह अमरीकी सेना के अफसरों से मिल सकेगी। उसे कई बार अपना रास्ता बदलना पड़ा ताकि उसका सामना बचे-खुचे जर्मन सैनिकों से न हो। अंत में वह एक अमरीकी अफसर से मिल सकी और यह आश्वासन दे सकी कि वैत्ज़लार के नागरिक उनके आने का विरोध नहीं करेंगे।

स्थानीय नागरिकों को नात्ज़ियों से मुक्त करवाने टैंक शहर में आ घुसे। एल्सी डबडबाई आँखों से उन्हें आते देख रही थी।

एल्सी का युद्ध अब खत्म हो चुका था।

लाइत्ज़ कारखाने के बाहर अमरीकी टैंक

एल्सी का युद्ध की लेखन शैली एल्सी कून-लाइत्ज़ (1903-1985) की उस लेखन शैली को बरकरार रखती जिसमें उन्होंने युद्ध के दौरान अपनी गतिविधियों का बयान किया था।

एल्सी के वर्णन के अनुसार, 9 सितम्बर 1943 के दिन, अपनी आज़ादी खोने के पहले गस्टापो को कहे गए उनके आखिरी शब्द थे, 'मानवतावाद के कानून ने मुझे वह सब करने को उकसाया जो मैंने किया। मुझे इसमें पछताने का कोई कारण नज़र नही आता।' उनके बयानों में मानवतावादी मूल्य साफ झलकते हैं। एल्सी सभी इन्सानों का सम्मान करती थीं, चाहे वे किसी भी पृष्ठभूमि के क्यों न हों। उनके मन में न्याय का गहरा भाव पैठा हुआ था, जो सही हो उसे करने का संकल्प, दूसरों की सहायता करना, और स्वतःस्फूर्त भाव से कुछ कर डालने और जोखिम उठाने की तत्परता उनमें कूट-कूट कर भरी थी।

एल्सी को ये मूल्य अपने पिता, डॉ. अर्नेस्ट लाइत्ज़ (1871-1956) से विरासत में मिले थे। वे वैत्ज़लार, जर्मनी में स्थित विश्व विख्यात लाइत्ज़ ऑप्टिकल वर्कस् के मालिक थे। लाइत्ज़ खास तौर से दुनिया के पहले 35 एमएम कैमरा को ईजाद करने के लिए जाना जाता था।

एल्सी अपने जाने-माने पिता के लम्बे व असाधारण रूप से उत्पादक जीवन के अंत तक उनके प्रति समर्पित रहीं। दुर्भाग्य से उनकी माँ एल्सी गुर्टियर की मृत्यु 1910 में ही हो गई थी। हालांकि एल्सी का अपने पति कुर्ट कून से बाद में तलाक हो गया, उनके तीन बच्चे थे - नूट, कोर्नेलिया व कारिन।

लाइत्ज़ परिवार की कम्पनी हमेशा से अपने यहाँ काम करने वालों के प्रति सदय व्यवहार के लिए जानी जाती थी। शरणार्थियों और चश्मदीद गवाहों के अनुसार जब नात्ज़ियों का दमन शुरू हुआ, उसके कुछ ही दिनों में कम्पनी यहूदी पीड़ितों की सहायता में जुट गई। युवा यहूदियों को लम्बी अवधि के लिए शागिर्दगी का अनुबंध दिया जाता; बाद में उन्हें अमरीका भेजने की व्यवस्था की जाती। कई दूसरे जो कैमरा की दुकानें चलाते थे, उन्हें भी विदेश बच निकलने में कम्पनी ने मदद की। ये तमाम गतिविधियाँ लाइत्ज़ परिवार के लिए व्यक्तिगत स्तर पर तो जोखिम पैदा करती ही थीं, साथ ही उनके कारोबार के लिए भी खतरा पेश करती थीं।

लाइत्ज़ कम्पनी को बाध्य किया गया कि वह जर्मन सेना के लिए ऑप्टिकल उपकरण बनाए। पर इसके बावजूद उसके अनेक कामगारों को युद्ध में लड़ने भेज दिया गया। तब 1942 में करीब 7-8 सौ यूक्रेनी महिलाओं को बंधुआ मज़दूरों की तरह लाइत्ज़ में काम करने भेजा गया। एल्सी को इन महिलाओं के राज़मर्रा के जीवन को सुधारने की चिंता रहती। एल्सी की गतिविधियों ने गस्टापो में शक पैदा कर दिया।

1943 में एक यहूदी महिला हैडविग पाम की वैत्ज़लार से स्वित्ज़रलैण्ड निकल भागने की कोशिश में एल्सी की भूमिका पर खुफिया पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। गस्टापो की योजना एल्सी को रेवन्सब्रुक स्थित नज़रबन्दी शिविर में भेजने की थी। यह हादसा लाइत्ज़ परिवार के करीबी मित्र डॉ. विलि हॉफ के हस्तक्षेप से गस्टापो को फिरौती की मोटी रकम दे टाला जा सका।

युद्ध के बाद एल्सी एलबर्ट श्वाइत्ज़र के अफ्रीकी प्रयास 'फिज़िकल हीलिंग' से जुड़ीं। एल्सी, अन्य देशों, खास कर फ्रांस से, जर्मनी के संबंध सुधारने के चांसलर कौनराड आडेनावर के अथक प्रयासों का भी हिस्सा रहीं।

एल्सी कून-लाइत्ज़ में हम एक साहसी स्त्री को देखते हैं जो आजीवन संकट में फंसे लोगों की सहायता में जुटी रही। एल्सी जैसे व्यक्ति के जीवन व उनके कार्य से हम कठिन समय में लोगों के बचाव में उठ खड़े होने की प्रेरणा पा सकते हैं।

एल्सी कून-लाइत्ज़ के कैद के अनुभवों का वर्णन व उनके अन्य पत्र डॉ. क्लाउस ऑटो नास द्वारा संपादित पुस्तक *एल्सी कून-लाइत्ज़ मुट त्ज़ुर मैन्शलीकाइट फ्रॉम आइनर फ्राउ इन इहरेर त्ज़ाइत* में संकलित हैं। इसका प्रकाशन यूरोपा फरलाग ने 1944 में किया था। इसकी पृष्ठ संख्या 521 है।